शैक्षिक सत्र–2026–27
(37) ट्रेड–खुदरा व्यापार (**Retail Trading**)
कक्षा–11

पाठ्यक्रम :–

इस ट्रेड में तीन–तीन घण्टे के पाँच प्रश्न–पत्र और प्रयोगात्मक परीक्षा हैं। अंकों का विभाजन निम्नवत् है :–

(अ) सैद्धान्तिक

प्रथम प्रश्न–पत्र–खुदरा व्यापार का परिचय	–60	300
द्वितीय प्रश्न–पत्र–उत्पाद एवं उपभोक्ता सेवायें	–60	
तृतीय प्रश्न–पत्र–खुदरा व्यापार में भण्डारण एवं आपूर्ति	–60	
चतुर्थ प्रश्न–पत्र–अर्थ व्यवस्था में खुदरा व्यापार	–60	
पंचम प्रश्न–पत्र–बहीखाता एवं लेखा शास्त्र	–60	

(ब) प्रयोगात्मक– 400

परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न–पत्र में उत्तीर्णांक न्यूनतम 25 अंक तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में 200 अंक पाना आवश्यक है।

नोट :–सैद्धान्तिक प्रश्न–पत्र में 33 प्रतिशत उत्तीर्णांक हैं तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में 50 प्रतिशत अंक पाना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम की उपयोगिता–

खुदरा व्यापार का देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। छात्र–छात्राओं को खुदरा व्यापार के आशय एवं उपयोगिता तथा विभिन्न पहलुओं पर जानकारी देना शैक्षिक पाठ्यक्रम के लिए अति आवश्यक है। पाठ्यक्रम की उपयोगिता हेतु निम्न बिन्दु महत्वपूर्ण हैं–

1–छात्र–छात्राओं को बिक्रय कला की जानकारी।
2–नये उत्पाद का प्रचार–प्रसार करने की कौशल का विकास
3–वस्तु की मांग उत्पन्न करने की तरीकों की जानकारी देना
4–उपभोक्ताओं की रुचि, आदत एवं फैशन आदि की जानकारी
5–एक अच्छे बिक्रेता के रूप में छात्रों को तैयार करना।

उद्देश्य–

खुदरा व्यापार के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं में एक अच्छे व्यापारी के गुणों का विकास करना तथा इससे भविष्य में स्वरोजगार स्थापित करने में सहायता मिलें उनके व्यक्तित्व का विकास करना अच्छे बिक्रय करने की जानकारी देना। प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार मे अपने कौशल एवं साहस से सामना करना तथा दिन–प्रतिदिन विकास करने में दक्ष होना।

प्रथम प्रश्न–पत्र
खुदरा व्यापार का परिचय

पूर्णांक : 60

इकाई–1 30 अंक

(क) प्रस्तावना।
(ख) विनिमय का अर्थ एवं परिभाषा।
(ग) व्यापार के विकास की अवस्थायें–
आत्मनिर्भरता युग, पशुपालन युग, चारागाह युग, लघु एवं कुटीर उद्योग, वर्तमान औद्योगिक युग।
(घ) वस्तु विनिमय की कठिनाई।
(ङ) मुद्रा विनिमय एवं साख विनिमय।

इकाई–2 30 अंक

(क) व्यापार का अर्थ एवं परिभाषा।
(ख) व्यापार की विशेषतायें।
(ग) व्यापार की सफलताओं के आवश्यक तत्व।
(घ) सफल व्यापारी के गुण।

द्वितीय प्रश्न–पत्र
उत्पाद एवं उपभोक्ता सेवायें

पूर्णांक : 60

इकाई–1 **30 अंक**

(क) उत्पाद का अर्थ एवं परिभाषा।
(ख) उत्पाद का महत्व।
(ग) उत्पादों के प्रकार।
(घ) उत्पाद प्रबंधन का अर्थ एवं महत्व।
(ङ) उत्पाद प्रबंधन की विभिन्न विधियाँ।
(च) उत्पाद प्रबंधन के उपकरण।
(छ) उत्पादों में ब्रान्डिंग का महत्व।

इकाई–2 **30 अंक**

(क) उपभोक्ता का अर्थ एवं परिभाषा।
(ख) ग्राहक एवं उपभोक्ता में अन्तर।
(ग) ग्राहक की आधार भूत आवश्यकताओं की पहचान।
(घ) उपभोक्ता संरक्षण।

तृतीय प्रश्न–पत्र
खुदरा व्यापार में भण्डारण एवं आपूर्ति

पूर्णांक : 60

इकाई–1 **30 अंक**

(क) भण्डारण का अर्थ एवं परिभाषा।
(ख) भण्डारण का महत्व।
(ग) भण्डारण की कमियाँ।
(घ) भण्डारण के कमियों को दूर करने के सुझाव।
(ङ) खुदरा व्यापार में भण्डारण की आवश्यकता।

इकाई–2 **30 अंक**

(क) भण्डार प्रबन्धन का अर्थ।
(ख) भण्डार प्रबन्धन की आवश्यकता।
(ग) भण्डार प्रबन्धन की विधियाँ।
(घ) भण्डार प्रबन्धन का महत्व।
(ङ) खुदरा व्यापार में भण्डार प्रबन्धन की आवश्यकता एवं महत्व।

चतुर्थ प्रश्न–पत्र
अर्थव्यवस्था में खुदरा व्यापार

पूर्णांक : 60

इकाई–1 **30 अंक**

(क) भारतीय अर्थव्यवस्था एवं खुदरा व्यापार।
(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था में खुदरा व्यापार का महत्व।
(ग) खुदरा व्यापार की सरकारी नीति।
(घ) अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में खुदरा व्यापार का महत्व।
(ङ) खुदरा व्यापार एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग।
(च) खुदरा व्यापार की चुनौतियाँ।

इकाई–2 **30 अंक**

(क) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का तात्पर्य।
(ख) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का महत्व।
(ग) भारत के खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश।
(घ) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एवं सरकारी नीतियाँ।
(ङ) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क।

पंचम प्रश्न–पत्र
बहीखाता एवं लेखाशास्त्र

पूर्णांक : 60

इकाई–1 विषय प्रवेश **30 अंक**

(क) पुस्तपालन एवं लेखाकर्म का इतिहास।
(ख) पुस्तपालन एवं लेखाकर्म का अर्थ एवं दोनों में अन्तर।

(ग) पुस्तपालन की प्रणालियाँ।
(घ) लेखांकन की प्रथायें एवं अवधारणायें।
(ङ) दोहरा लेखा प्रणाली का अर्थ, लक्षण एवं लाभ–दोष।
(च) महत्वपूर्ण शब्दों का स्पष्टीकरण।

इकाई–2 जर्नल एवं जर्नल के विभाग **30 अंक**

(क) जर्नल का आशय।
(ख) लेखा करने का नियम।
(ग) संयुक्त लेखे।
(घ) महत्वपूर्ण पुस्तक–रोकड़ पुस्तक, क्रय पुस्तक, विक्रय पुस्तक, क्रय वापसी पुस्तक, विक्रय वापसी पुस्तक, प्राप्त बिल पुस्तक, देय बिल पुस्तक एवं मुख्य जर्नल।
(ङ) बैंक सम्बन्धी लेन–देन।

ट्रेड खुदरा व्यापार

खुदरा व्यापार निर्माताओं, उत्पादकों एवं थोक व्यापारियों को उपभोक्ता से जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। खुदरा व्यापार का भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। खुदरा व्यापार में व्यापारी का उपभोक्ता से सीधा सम्बन्ध होने के कारण उपभोक्ता के रुचि, आय, फैशन आदि की जानकारी प्राप्त करके उत्पादकों को अपने उत्पाद का पैमाना निर्धारित करने में सहयोग प्रदान करता है और वहीं दूसरी ओर नये–नये उत्पाद की जानकारी अपने महत्वपूर्ण विक्रय कला कौशल के आधार पर उपभोक्ता तक पहुँचाता है और वस्तु की मांग उत्पन्न करता है।

खुदरा व्यापार का प्रयोगात्मक स्वरूप

1–वस्तुओं का प्रभावी व आकर्षक ढंग से प्रस्तुतीकरण
2–विक्रयकला में दक्षता का ज्ञान देना–
(क) ग्राहकों के प्रति अच्छा व्यवहार।
(ख) विक्रय योग्य वस्तु की पूर्ण जानकारी देना।
(ग) ग्राहकों द्वारा वस्तु के सम्बन्ध में मांगी गयी जानकारी का सम्यक उत्तर देना।
3–ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उनकी सूची एवं ग्राहक कार्ड बनाना।
4–महत्वपूर्ण अवसरों पर उन्हें बधाई कार्ड भेजना।
5–वस्तु की मांग उत्पन्न करने के नये तरीकों की खोज करना।
6–छात्र–छात्राओं में बिक्रय कला का ज्ञान कराने के लिए विद्यालय स्तर पर स्टॉल लगाना।
7–छात्रों को वस्तु की सैम्पलिंग करके वस्तु के विषय में जानकारी देना।
8–वस्तु की लागत कम करने के लिये नये–नये तरीकों की खोज करना।
9–बिक्रय के सभी पहलुओं पर विचार करने के लिए विद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन करना तथा वस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए ग्राहकों की संगोष्ठी का आयोजन करने सम्बन्धी ज्ञान देना।

नोट :–

वर्ष के दौरान आन्तरिक एवं वाह्य परीक्षा के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं से निम्न कार्य कराये जायें–

1–छात्र–छात्राओं से प्रोजेक्ट कार्य कराकर उसकी फाईल बनायें।
2–चार्ट के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करना।
3–छात्र–छात्राओं द्वारा मॉडल भी बनवाया जाये।
4–छात्र–छात्राओं से किसी नये उत्पाद के विज्ञापन की तकनीकियाँ प्रस्तुत करने की विधि पर डिबेट कराया जाये।
5–नये उत्पाद को बाजार में छात्र–छात्राओं से उपभोक्ताओं को जानकारी दिलवाना।
6–बाजार सर्वेक्षण कराकर उपभोक्ता की रुचि, आय, प्रचलित फैशन आदि की जानकारी प्राप्त करना।

आवश्यक उपकरण

1–कम्प्यूटर प्रोजेक्टर
2–चार्ट पेपर
3–फाइलें
4–सादा कागज
5–दैनिक उपभोग से सम्बन्धित प्रमुख उत्पाद।

उपचारात्मक शिक्षण हेतु चार यूनिट टेस्ट निम्नलिखित है–

(i) प्रथम यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) जुलाई द्वितीय सप्ताह 20 अंक
(10 अंक ग्रीष्मावकाश गृहकार्य + 10 अंक यूनिट टेस्ट)

(ii) द्वितीय यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) अगस्त अन्तिम सप्ताह 20 अंक

(iii) तृतीय यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) नवम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक

(iv) चतुर्थ यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) दिसम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक

नोट– उपरोक्त यूनिट टेस्ट उपचारात्मक शिक्षण के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर लिये जायेंगे। इनके प्राप्तांक परीक्षफल में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे।